thearyasamaj.org

Annual Susbscription fee
100/

ओ३म्

3rd February 2015

# आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

# गुरुकुल घटकेश्वर ट्रस्ट लैण्ड विवाद में पुनः एक बार ऐतिहासिक विजय

आंध्र प्रदेश- तेलंगाणा संयुक्त हाईकोर्ट ने पुनः एक बार गुरुकुल घटकेश्वर ट्रस्ट लैण्ड विवाद में सरकार के वादे को खारिज करते हुए समस्त भूमि को एक बार फिर गुरुकुल के पक्ष में गुरुकुल की भूमि घोषित किया। सरकार शुरु से ही यह दावा करती रही है कि यह भूमि अर्बन लैण्ड सीलिंग एक्ट भूअधिग्रहण के तहत सरकार ने ले ली है। लेकिन सरकार की पुनः समीक्षा दरखास्त को खारिज करते हुए ट्रस्ट लैण्ड घोषित कर दिया। पुनः यह एक ऐतिहासिक विजय है। हमें पूरा विश्वास है कि आगे-आगे सरकार ट्रस्ट के ट्रस्टियों को या आर्य प्रतिनिधि सभा को पूरे अधिकारों के साथ काम करने की सुविधा

## Gurukul land: Setback to govt in HC

TIMES NEWS NETWORK

**Hyderabad:** In a setback to the Telangana government in the Gurukul Trust land issue, the Hyderabad High Court on Friday refused to review its orders passed in September 2012 wherein it had held that almost all the 576 acres of the trust land were occupied, sold or encroached because of which the state should provide the trust an equal extent of alternative land on the outskirts of Hyderabad city.

The Telangana government sought a review of this order saying that it is not practically possible for it to compensate the trust with alternative land. It also wanted the HC to uphold the order of the tribunal set up under the Urban Land Ceiling Act which declared 576 acres of trust land as surplus and said that this should go to the government.

▶No relief for petitioners: P7

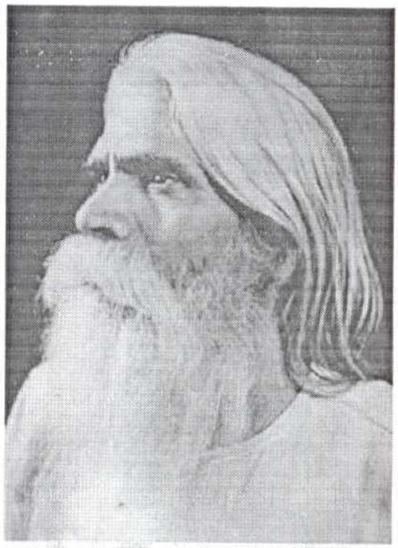

## No relief for petitioners

▶From P1

Some individual property owners too approached the court seeking review.

However, on Friday, the bench comprising Justice Vilas V Afzulpurkar and Justice B Siva Sankara Rao dismissed these review petitions and refused to grant the petitioners any relief.

In its September 12, 2012, order the HC bench found fault with the state for miserably failing to protect the trust land and directed it to frame a special scheme for regularizing the plots and flats built on the trust land by housing societies and third parties and to earmark a portion of this income for buying alternative land for the trust.

The state was directed to constitute a special committee with officers in the rank of commissioner from the concerned departments together with representatives from the trust and occupiers to arrive at a rate for regularization.

The court ruled that the government shall utilize some of this regularization fees for allotting land to the Gurukul Trust in lieu of encroached land.

thearyasamaj.org



# Gurukul Trust gets its land back

## HC Tells Govt To Regularise Encroachments By Collecting Fees From Residents

TIMES NEWS NETWORK

**Hyderabad:** In a significant ruling, a division bench of the AP high court on Wednesday declared that Gurukul Trust is the absolute owner of the 627-acre prime land at Khanapur near Hi-Tec City and all those who encroached this land and raised several flats and high rise buildings must now compensate the trust with an equivalent alternative land. Several high profile structures of Ayyappa Society and other colonies are situated in this area apart from the structures of MNCs and their ventures.

The trust becomes the owner and all the proceeds collected by the government in the name of regularisation are to be given to the trust and the initial charitable activities for which the trust is formed can be commenced again, the bench of acting CJ P C Ghose and justice Vilas V Afzulpurkar said in its judgment on Wednesday. The bench directed the authorities to evict all those who are not willing to get their occupations regularized for a price.

TOI

A file photo of a building being dismantled in Ayyappa Society, one of several colonies that came up in Gurukul Trust land

Though the land was given in charity to the Gurukul trust by philanthropist Badrinath in 1951, one of its subsequent trustees obtained an exemption under the Urban Land Ceiling (ULC) Act and started selling the land for nominal prices. Swamy Ayyappa Society got 71 acres this way. In 1998, the then regime issued orders converting this area into a residential area but later declared that all the transactions effected prior to 1987 were illegal.

It maybe recalled that Gurukul Trust was formed with noble goals like feeding the orphans, providing education to destitute, cow protection etc. The trust had huge extents of land and the government had granted exemption for the trust under the Urban Land Ceiling Act so that the trust could continue to be the owner in spite of ULC Act.

Then there were allegations that the land are being sold away. After some time, the government withdrew the exemption granted earlier. Due to this order the land became excess land under the ULC Act and vested with the government. The occupiers, persons and institutions that purchased these land approached the government for regularisation. Meanwhile, two division benches of the court upheld the right of the trust over the property.

Current PIL was filed complaining that the government could not have withdrawn the exemption depriving the trust of the property and the money realised for the land. The bench set aside the order of the government. Now the trust gets back the land and thus the government has to remit crores it realised in the name of regularisation. A committee which comprises of the commissioner endowments and other senior officers will take steps to see that monies are realised and some alternate land is purchased in the name of the trust. The trust shall be run to full fill the goals it had set for itself.

thearyasamaj.org

हाईकोर्ट के निर्णय के बाद आर्य प्रतिनिधि सभा ने साधारण सभा को सभा प्रधान विट्ठलरावजी की अध्यक्षता में आयोजित किया। मंच पर माता निर्मला योगभारतीजी, उप प्रधान डॉ. वसुधा शास्त्रीजी, उपमंत्री जगनमोहनजी, उपमंत्री डॉ. सी.एच. चंद्रय्याजी, गुरुकुल के पूर्व विद्यार्थी व संरक्षक रामरेड्डीजी आदि देखे जा सकते हैं।

प्रधानजी सभा को संबोधित करते हुए।

thearyasamaj.org

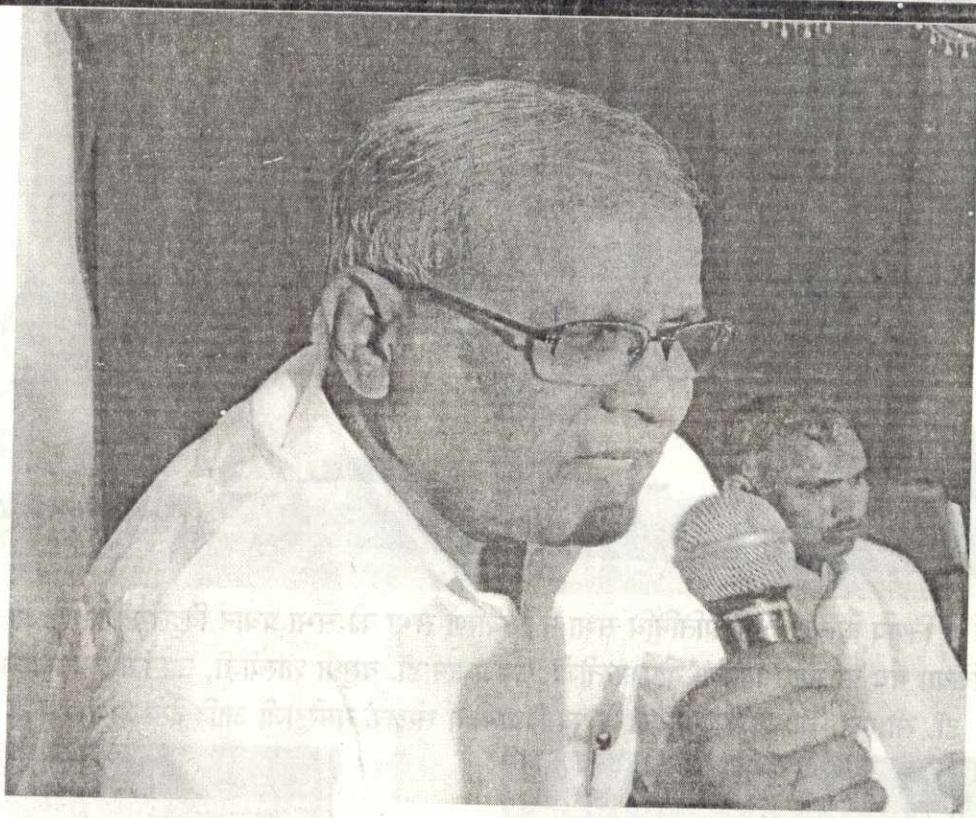

अन्य चित्र में श्री अशोक कुमारजी एडवोकेट,श्री सत्यनाराणजी एडवोकेट बोलते हुए,अन्य महानुभाव बैठे हुए।

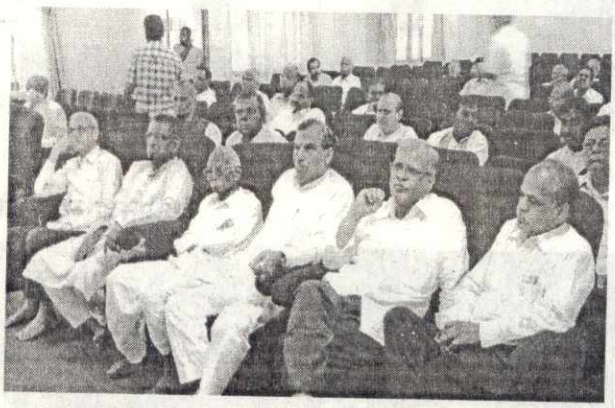

thearyasamaj.org

# 'धर्म, मत–मतान्तर और भूख'

**–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

धर्म और भूख में क्या परस्पर कोई सम्बन्ध है? हां, अवश्य है, कम से कम भारत में तो रहा है और अब भी है, ऐसा स्पष्ट प्रतीत होता है। धर्म दो प्रकार के हैं एक तो वास्तविक, यथार्थ या सत्य धर्म है जो संसार के सभी लोगों के लिए एक समान है, इसलिए वह सबका एक ही है। सभी शुभ गुणों को धारण करना ही मनुष्य–धर्म है। यह शुभ गुण कौन–कौन से हो सकते हैं? विचार करने पर ज्ञात होता है कि ईश्वर को जानना, उसके सत्य स्वरूप का चिन्तन, उसका गुणगान व उससे सहायता की मांग करना, पर्यावरण को शुद्ध रखना व उसके लिए यज्ञ–अग्निहोत्र आदि करना, जीवित माता–पिता–आचार्यों का सेवा–सत्कार–श्राद्ध–तर्पण कर उन्हें प्रसन्न व सन्तुष्ट रखना, सत्य बोलना, दूसरों का हित करना, कृपण, वृद्ध, असहायों व पीड़ितों की सेवा, परोपकार करना, अविद्या का नाश, विद्या की वृद्धि, सबको आदर देना व करना, कोध न करना, असत्य न बोलना, स्वार्थ से ऊपर उठकर सबके हित में अपना हित समझना, दूसरों की उन्नति में बाधक न बनकर साधक बनना व सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझना, अपनी शारीरिक, सामाजिक और आत्मिक उन्नति करना, देश हित के लिए कार्य करना आदि शुभ–गुण मनुष्य धर्म कहे जा सकते हैं।

इस सत्य धर्म से इतर मत–मतान्तर–पन्थ–सम्प्रदाय–रिलीजन–मजहब–गुरूडम आदि हैं जो स्वयं को भी धर्म नाम से प्रचारित करते हैं। इन मतों व सम्प्रदायों की स्थापना व आविर्भाव किसी एक ऐतिहासिक पुरूष से देश–काल–परिस्थिति के अनुसार हुआ था जब सर्वत्र अज्ञान व अविद्या छाई हुई थी, समाज में अज्ञान, अन्याय व शोषण आदि विद्यमान था। देश व काल के अनुसार ही इनकी मान्यतायें व सिद्धान्त हैं जो अच्छे भी हैं व कुछ आज के आधुनिक समय में अप्रसांगिक व हितकर प्रतीत नहीं होते। उनका संशोधन होना चाहिये परन्तु प्रायः सभी मतों में अपनी मान्यताओं, सिद्धान्तों व कर्मकाण्डों में सुधार व संशोधन किये जाने की व्यवस्था नहीं है। इसका एक कारण यह भी है कि जिन लोगो के हाथों में इनकी बागडोर है, धर्म सुधार का कार्य करने से उनके हितों को हानि होने की सम्भावना है। लगभग दो अरब पुरानी मानव सभ्यता व संस्कृति में एक हजार से दो–तीन हजार पूर्व अस्तित्व में आये मत–मतान्तर अपनी मान्यताओं आदि को शाश्वत मानते हैं, यह सबसे बड़ा आश्चर्य है। देश की स्थिति भी ऐसी है कि उसमें सबको स्वतन्त्रता का अधिकार है जिसके नाम पर लोग असत्य व अनुचित बातों पर टीका टिप्पणी करने से बचा करते हैं। इनमें से अधिकांश मतों का यदि इतिहास देखें तो इन्होंने अपने प्रचार व प्रसार के लिए छल–कपट–झूठ–अविद्या–दम्भ–लोभ–सेवा–हिंसा आदि का सहारा लिया है। मनुष्य का सबसे बड़ा निजी धर्म अपने प्राणों वा जीवन की रक्षा है। जब किसी के प्राणों पर बन आती है तो लोग धर्म–कर्म कुछ नहीं देखते। अतीत में ऐसा ही हुआ है। आज जितने भी मत–मतान्तर हैं उनमें कहीं न कहीं इन अ–धार्मिक कृत्यों का सहारा लेकर अपनी–अपनी संख्या को बढ़ाया गया है। आज महर्षि दयानन्द के प्रभाव से लोग अपने मत की प्रशंसा अधिक नही कर पाते हैं। अच्छाईयां व बुराईयां सभी मतों में हैं। वह अपनी कुछ अच्छाईयों का बखान कर आत्म–तुष्टि कर लेते हैं परन्तु परस्पर विवाद के विषयों पर मौन साध लते हैं।

महर्षि दयानन्द का जीवन इनसे बिलकुल विपरीत था। उन्होंने उन मुद्दों पर विचार कर समाधान ढूंढा जो सर्वाधिक विवादास्पद थे। उदाहरण के लिए, क्या मूर्तिपजा सत्य है? क्या अवतारवाद और फलित ज्योतिष सत्य है? क्या सामाजिक असमानता तथा स्त्री व शूद्रों को विद्या व अध्ययन से वंचित रखना उचित है? क्या सती प्रथा, विधवाओं पर अत्याचार, बेमेल विवाह, जन्मना जाति व्यवस्था उचित है? उन्होंने स्त्री व पुरूषों की समानता की बात कही और कहा कि सबको मर्यादित जीवन व्यतीत करना चाहिये। उन्होंने योग, समाधि,

thearyasamaj.org

वेदाध्ययन, साधना आदि से जो सत्य व यथार्थ उत्तर प्राप्त किये उनका मौखिक प्रचार किया और धर्म–प्रेमियों के निवेदन करने पर सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, ऋग्वेद–यजुर्वेद–संस्कृत–हिन्दी–भाष्य, संस्कार विधि ा, व्यवहारभानु, गोकरुणानिधि आदि अनेक ग्रन्थ भी लिखे जिनकी सहायता से सत्य धर्म का निर्धारण होता है। आज भी इन ग्रन्थों को पढ़कर मनुष्य तर्क व युक्ति प्रमाणों से स्वधर्म को जानकर अपने जीवन के उद्देश्य को जानने के साथ उसे सिद्ध व सफल भी कर सकता है। उनकी शिक्षायें, मान्यतायें व सिद्धान्त सार्वभौमिक वा universal हैं। सत्याचार, परोपकार, सेवा, ब्रह्मचर्य का पालन, निःस्वार्थ जीवन, अंहिसा, सभी प्राणियों की रक्षा ही धर्म है तथा मांसाहार, मदिरापान, धूम्रपान, जुआं, व्यभिचार आदि से बचना चाहिये क्योंकि उनके अनुसार यह धर्म नहीं अपितु अधर्म या पाप कर्म हैं। अधिक सुख–सुविधा एवं भोग प्रधान जीवन भी इस जन्म व परजन्म में दूखों का कारण बनता है, ऐसा उनके विचारों का अध्ययन करने से ज्ञान होता है जो कि उचित ही हैं।

भूख सभी मनुष्यों को प्रतिदिन प्रातः, दिन व सायं समय में लगती है। यदि भूखे को समुचित भोजन न मिले तो वह दुखी हो जाता है। वह भोजन के लिए प्रयास करता है। यदि उसे भोजन प्राप्ति के साधन नहीं मिलते तो वह दूसरों से सहायता मांगता है। भिक्षा मांगना भी इनमें से एक तरीका हो सकता है। यह देखा जाता है कि देशी–विदेशी मत–मतान्तर व मजहब के लोग जिनके पास प्रचुर धन व साधन होते हैं, उनमें जो अपने धर्मावलम्बी बन्धुओं की संख्या बढ़ाना चाहते हैं वह व उनके धर्म–प्रचारक ऐसे ऐसे स्थानों पर जहां निर्धनता, गरीबी व भूख हैं, पहुंच जाते हैं। लोगों को भोजन व दवा आदि बांटते हैं और उनके लिए चिकित्सालय व विद्यालय खोलते हैं और उसकी आड़ में उनका धर्म परिवर्तन कर अपने मत में सम्मिलित कर लेते हैं। भारत का विगत कुछ शताब्दियों का इतिहास ऐसी घटनाओं से भरा पड़ा है। आज इस प्रकार की घटनायें कुछ कम तो अवश्य हुईं हैं परन्तु हमें लगता है कि समाप्त नहीं हुई हैं। यह सब काम योजनाबद्ध तरीके से किये जाते हैं। इसके पीछे सुदृढ़ संगठन होते हैं। हिन्दू समाज की जन्मना–जाति–व्यवस्था व विषम सामाजिक व्यवस्थायें व समस्यायें भी इसमें एक कारण होतीं हैं। कई लोग इससे तंग आकर धर्म त्याग करते आये हैं व अब भी यदा–कदा कर देते हैं। इसे मानने वाले धर्माधीशों के कानों पर जू नहीं रेंगती। ऐसे लोग अज्ञान व स्वार्थ में खोये प्रतीत होते हैं। आज भी यह स्थिति है कि देश की आधी जनसंख्या के पास दो समय के भोजन की न्यूनतम व्यवस्था नहीं है। इन 65 करोड़ से अधिक लोगों की जिंदगी व इनके दुःखों का कुछ अनुमान तो लगाया ही जा सकता है। इसका भावी परिणाम घातक हो सकता है। अतः आवश्यकता है कि सरकार को सबसे अधिक ध्यान इन निर्धनतम व गरीब लोगों की समस्याओं के हल करने पर देना चाहिये, परन्तु यह तो तभी होगा कि जब अन्य सरकारी कार्यों से धन बचेगा। आज साधनों के देशवासियों के लिए उपयोग व उनके वितरण में सन्तुलन बिगड़ा हुआ है। सन्तुलन ठीक होगा तभी गरीबों के लिए कुछ किया जा सकता है। देश के सारे साधन प्रायः शहरी जनता के उत्थान, उन्नति व विकास में लगते प्रतीत होते हैं। आज स्मार्ट सिटी बनाये जाने का तो शोर सभी दिशाओं में सुनाई दे रहा है परन्तु निर्धनतम व्यक्ति की भूख दूर करने व उसकी न्यूनतम आवश्यकताओं रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, चिकित्सा व रोजगार पर शायद कम ही ध्यान दिया जा रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि अतीत में हमारे निर्धन व सामाजिक दृष्टि से कमजोर लोगों को जो मुख्य धारा से दूर किया गया है, उसकी पुनरावृत्ति न हो। **यह काम सरकार के करने का है परन्तु इसके लिए आर्य समाज जैसे सामाजिक संगठनों की भूमिका भी है।** कुछ सामाजिक संगठन कार्य कर भी रहे हैं। जो कर रहे हैं वह प्रंशसा के पात्र है। अन्यों को भी उनसे प्रेरणा लेनी चाहिये। दीनबन्धुओं के लिए प्रत्येक सुधी व्यक्ति को अपने जीवन में कुछ न कुछ करना चाहिये। **भूखे और रोगी व्यक्ति का कोई धर्म नहीं होता,** उसे तो येन–केन–प्रकारेण भोजन चाहिये जिससे उसकी जान बच सके। हम आशा करते हैं कि समाज के सभी मतों के बन्धु अपनी मान्यतओं व सिद्धान्तों से ऊपर उठकर निर्धनों के हितों का चिन्तन करेंगे और धनी व निर्धनता में जो जमीन व आसमान का अन्तर है, यदि उसे कुछ बांटा या कम किया जा सके तो यह धर्म का कार्य व सेवा होने के साथ देश सेवा होगी।

thearyasamaj.org

# सभी धर्म किसी बड़े वृक्ष के फल व फूल है?

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

हम संसार में अनेक धर्मों को देखते हैं। वस्तुतः यह सब धर्म न होकर मत, मतान्तर, पन्थ, सम्प्रदाय, रिलीजियन या मजहब हैं। यह सब धर्म क्यों नहीं है तो इसका उत्तर है कि मनुष्यों के कर्तव्यों व शुभ कर्मों का नाम धर्म है। यह धर्म सार्वभौमिक व सभी मनुष्यों के लिए एक ही होता है। हम सभी मतों वा धर्मों में एक ही विषय पर भिन्न–2 मान्यतायें पातें हैं। ईश्वर व आत्मा की ही चर्चा करें तो सभी विज्ञ जन हमसे सहमत होंगे कि संसार में ईश्वर व जीवात्मा का स्वरूप अनेक न होकर एक है, अतः सर्वत्र वा सर्वथा एक समान ही होना चाहिये। **क्या सभी मतों में ईश्वर व जीवात्मा का स्वरूप एक समान है?** ऐसा क्योंकि नहीं है, इससे यह सिद्ध होता है कि भिन्न–2 मतों वा धर्मों में ईश्वर व जीवात्मा के जो स्वरूप हैं वह किसी एक सत्य स्वरूप से विकृत होकर अस्तित्व में आये हैं या फिर धर्म–संस्थापकों के अपने ज्ञान की स्थिति का प्रतिबिम्ब इनमें मिलता है। उनको यथार्थ का ज्ञान न होने के कारण उन्हें जैसा व जितना अनुमान से ज्ञान हुआ, वैसा ही उन्होंने स्वमत में उल्लेख व प्राविधान किया। **अनुमान से जानने की कोशिश करें तो ज्ञात होता है कि वेदों में ईश्वर व जीववात्मा का जो स्वरूप है, विचार करने पर वह पूर्ण सत्य व तर्क संगत प्रतीत होता है।** यह सारा ब्रह्माण्ड एक ईश्वर से बना है। अतः उसका सर्वव्यापाक, निराकार, सर्वातिसूक्ष्म, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, अजन्मा, अनादि, अनुत्पन्न, अमर, अनन्त, अविनाशी इत्यादि गुणों से युक्त होना आवश्यक है। यदि ऐसा नहीं मानेंगे तो इसके विपरीत गुणों व स्वरूप वाले ईश्वर से सृष्टि का निर्माण नहीं हो सकता। इसी प्रकार से जीवात्मा एकदेशी, अल्पज्ञ, ससीम, सूक्ष्म, नेत्रों से अगोचर, जन्म–मरण धर्मा, जन्म का आधार कर्म, भोग वा प्रारब्ध ा एवं दुःखों से मुक्त होने अथवा मोक्ष की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करने के लिए ईश्वर के द्वारा मिलता है। यह तर्क संगत स्वरूप वेद व प्राचीन वैदिक साहित्य में प्राप्त होता है परन्तु देश–देशान्तरों की सभी मतों की धर्म पुस्तकों में ईश्वर व जीवात्मा का ऐसा विशुद्ध स्वरूप प्राप्त नहीं होता। इसके कारणों पर जब विचार करते हैं तो यह अनुमान होता है कि महाभारत काल के बाद वेदों का ज्ञान लुप्त हो गया था।

यथार्थ ज्ञान के विलुप्त होने के कारण अपने–2 समय के धर्म प्रवर्तकों को प्रयास करने पर भी जितना जैसा ज्ञान सुलभ हुआ अथवा वह अपनी बुद्धि व विवेक से सोच कर जो निर्णय कर पाये, उसे उन्होंने वैसा ही प्रस्तुत किया। मुख्यतः जीवात्मा के स्वभाव **'अल्पज्ञता'** आदि के कारण उस काल में ईश्वर, जीव व धर्म का पूर्ण सत्य व विशुद्ध स्वरूप जैसा वेदों में है, सुलभ न हो सका। उस काल में सत्य व तर्क आदि प्रमाणों के विपरीत कुछ मान्यतायें स्थिर हुई जिसे लोग मानते आ रहे हैं क्योंकि तब अन्य विकल्प नहीं थे। इस पूरे विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि सषष्टि की आदि में ईश्वर के द्वारा आदि व प्रथम पीढ़ी के पुरूषों की आत्माओं में चार वेदों का जो ज्ञान दिया गया था, जो कि स्वतः प्रमाण वा निर्भ्रान्त है, सम्पूर्ण मानव धर्म है, वही एक मात्र धर्म महाभारत काल तक सारे विश्व में प्रचलित रहा। अन्य सभी मतों की स्थापना व आविर्भाव महाभारत काल के बाद ही हुआ है। इसी कारण संसार में 5 सहस्र वर्ष से पुराना कोई मत वा धर्म ससार में नहीं है। सभी देशी व विदेशी मत व धर्म विगत 2 से 3 हजार वर्षों में ही अस्तित्व में आये हैं जिनका आधार प्राचीन वेद वा वैदिक धर्म रहा है। **इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि संसार के सभी धर्म किसी बड़े वृक्ष के फलों के समान है अर्थात् संसार के सभी मतों का मुख्य आधार वेद रूपी वटवृक्ष है।** हम यह अनुभव करते हैं कि इस आंकलन पर किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिये।

thearyasamaj.org

# 'महर्षि दयानन्द के दो अधूरे स्वप्न'

**–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून**

महर्षि दयानन्द ईश्वरीय ज्ञान – चार वेदों के उच्च कोटि के विद्वान थे। वह योग के ज्ञाता व असम्प्रज्ञात समाधि ा के सिद्ध योगी थे। उन्होंने देश के विभाजन से पूर्व देश के अधिकांश भाग का भ्रमण कर मनुष्यों की धार्मिक, सामाजिक तथा अन्य सभी समस्याओं को जाना व समझा था। उनके समय जितने भी देशी व विदेशी मत–मतान्तर थे, उनके स्वरूप व उनकी उत्पत्ति की परिस्थितियों पर विचार कर, मनुष्य व प्राणीमात्र के हित को सम्मुख रखकर एक वैज्ञानिक व शोध छात्र की भांति उन्होंने उन्हें जाना भी था व समझा था। **सब मतों का अध्ययन करने व वेद ज्ञान पर अधिकार प्राप्त करने के बाद वह इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि संसार में सभी मत–मतान्तरों की प्राचीन व अर्वाचीन पुस्तकों में पूर्ण सत्य व प्रामाणिक ज्ञान केवल वेदों में ही है।** वेदों में सत्य व पूर्ण ज्ञान यथा आघ्यात्मिक, सामाजिक व भौतिक ज्ञान आदि विस्तृत रूप में होने के कारण ही उन्होंने वेदों को स्वीकार किया, उन्हें स्वतः प्रमाण का दर्जा दिया और उनका प्रचार किया। उनके प्रचार का उद्देश्य अन्यों की तरह कोई धर्म प्रवर्तक, अवतार या महन्त आदि बनने का नहीं था अपितु मनुष्य जाति का कल्याण ही उनका उद्देश्य था। इसी कारण उन्होंने अपने उद्देश्य से जुड़ी हुई कुछ बातों पर प्रकाश डाला है जिससे कि भ्रान्ति न हो। उन्होंने आध्यात्मिक, सामाजिक व व्यवहारिक जीवन विषयक अपने सत्य ज्ञान के प्रचार के आन्दोलन का एक नियम ही यह बनाया कि सत्य के ग्रहण और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये। मनुष्य को अपना प्रत्येक कार्य सत्य और असत्य को विचार करके करना चाहिये। जो सत्य है, उसे स्वयं मानना व अन्यों से मनवाना मुझे अभीष्ट है। यही वेद सम्मत मनुष्य धर्म है। उनके लिए सत्य वह है जो प्रत्यक्ष आदि आठ प्रमाणों से सत्य सिद्ध हो तथा जिससे सभी मनुष्यों को समान रुप से लाभ हो व हानि किसी भी प्रकार से किसी की न हो। इसी कारण उन्होंने ईश्वर के पुराणों में वर्णित अलंकारिक व अविश्वसनीय स्वरूप को स्वीकार नहीं किया और ईश्वर व जीवात्मा के सत्य स्वरूप का अनुसंधान करते रहे।

ईश्वर व जीवात्मा को उन्होंने वेद और वैदिक साहित्य को पढ़कर जाना था और योग के अभ्यास से समाधि की अवस्था में ईश्वर व जीवात्मा के सत्य स्वरूप का प्रत्यक्ष वा साक्षात्कार करके उसे प्राप्त किया था। जीवात्मा के विषय में भी उन्होंने सभी मतों, सम्प्रदाय व मजहबों में वर्णित स्वरूप का अध्ययन किया, उसे पूरी तरह से जाना व समझा तथा उसे सत्य की कसौटी व नयाय दर्शन के आठ प्रमाणों पर परखा और अपनी खोज पूरी करने पर सभी प्रमाणों पर सत्य सिद्ध हुए आत्मा के स्वरूप को ही स्वीकार किया। वह ईश्वर व जीवात्मा आदि का सब प्रकार से सत्य ज्ञान प्राप्त कर लेने के बाद मौन व निष्क्रिय नहीं रहे अपितु अपने प्राणों व सुखों की चिन्ता किए बिना मनुष्य जाति के कल्याणार्थ इनका प्रचार करने के लिए उद्यत हुए जिसका परिणाम है कि आज हम जैसे साधारण हिन्दी पठित अध्येता अनुभव करते हैं कि हम ईश्वर, जीव व प्रकषति के यथार्थ स्वरूप को अपने बड़े–बड़े धर्माचार्यों के समान व यथार्थ रूप में जानते हैं। उनके द्वारा अनुसंधान कर प्राप्त किया गया ईश्वर का संक्षिप्त स्वरूप है – **'सत्य, चित्त, आनन्दयुक्त, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, पक्षपातरहित, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र, सषष्टिकर्त्ता तथा सभी मनुष्यों के लिए प्रतिदिन उपासनीय।'** इसी प्रकार जीव का संक्षिप्त स्वरूप है – **'सत्य, चेतन, आनन्द रहित, अल्पज्ञ, सूक्ष्माकार बिन्दूवत, अल्प शक्तिमान, ज्ञानेच्छु व कर्मशील, अपने शुद्ध स्वरूप में न्याय करने वाला, पक्षपात रहित, दयालु, अजन्मा, अनन्त, अमर, मूल स्वरूप में विकारों से रहित परन्तु सत्व, रज व तम गुणों के प्रभाव से कुछ अवगुणों व विकारयुक्त प्रवषत्तियों को धारण करने वाला और सत्य को जानकर व ग्रहण कर दुगुर्णों, दुर्व्यसनों व दुःखों से मुक्त होने वाला, अनादि, ईश्वर जीवात्मा का आधार है,**

thearyasamaj.org

ईश्वर से विद्यादि धन व ऐश्वर्य की प्राप्ति करने वाला, ईश्वर से व्याप्य, एकदेशी, ससीम, अजर, अज्ञानावस्था में भयभीत होना, नित्य तथा अविद्या आदि से मुक्त होने पर पवित्र अवस्था को प्राप्त, **कर्मों का कर्ता व उसके फलों का ईश्वर की व्यवस्था से भोगकर्त्ता है आदि।'** यह जीवात्मा का स्वरूप है जिसे उन्होंने सत्य के अनुसंधान से प्राप्त किया और अपने प्रवचनों, लेखों व पुस्तकों आदि के द्वारा इसका प्रचार किया। इसी प्रकार से प्रकषति का स्वरूप भी उनके सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थ, वेद भाष्य, 6 दर्शन व उपनिषदादि ग्रन्थों के अध्ययन से जाना जा सकता है।

हम यह लेख महर्षि दयानन्द अनेकानेक स्वप्नों में से दो स्वप्नों की चर्चा करने के लिए लिख रहे हैं। पहला यह कि उनके अनुभव व खोज का परिणाम यह निकला कि संसार में जो भिन्न–भिन्न मत हैं यह सब मनुष्यों के सुखों के पूरी तरह साधक नहीं, अपितु बाधक भी हैं। वेदों से इतर सभी मतों में अज्ञान भरा हुआ है जिसके कारण मनुष्यों को संसार में अनेक दुःख प्राप्त होते हैं। उनके अनुसार संसार में ईश्वर की केवल एक ही सत्ता है व सभी मतों, पन्थों व सम्प्रदायों में जिस ईश्वर का उल्लेख है, वह अलग–अलग न होकर एक ही सत्ता के भिन्न–भिन्न भाषाओं के शब्दों में वर्णन है। वह यह अनुभव करते थे कि सभी मतों के धर्माचायों को परस्पर प्रीतिपूर्वक एक साथ मिल कर सत्य मत व धर्म का अनुसंधान करना चाहिये और उस सत्य मत को संसार के सभी लोगों को मानना व उसका आचरण करना चाहिये। इसके लिए उन्होंने प्रयास भी किये थे परन्तुं अन्य मतों के धर्माचायों से सहयोग न मिलने के कारण वह इसमें सफल नहीं हो सके। उनका यह कार्य आज भी अधूरा है। यह तथ्य है कि सृष्टि के आरम्भ से महाभारत काल तक के 1.96 अरब वर्षों तक वेदों पर आधारित केवल एक ही सत्य मत सारे संसार में प्रचलित रहा है जिसका आचरण कर संसार में कहीं अधिक सुख व शान्ति रही है। उस काल में वह समस्यायें नहीं थी जैसी आजकल मत–मतान्तरों द्वारा उत्पन्न समस्यायें हैं। **इस विवाद रहित व सर्वमान्य सिद्धान्तों वाले मत वा धर्म, जो कि वर्तमान में वैदिक धर्म है, के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निरन्तर प्रयास होने चाहिये। इस लक्ष्य के प्राप्त न होने का एक कारण हमें वेदों के मानने वाले आर्य समाज के प्रचार की शिथिलता भी दृष्टिगोचर होती है।**

ऋषि दयानन्द के इस स्वप्न को पूरा करने के लिए जितने पुरुषार्थ व प्रयासों की आज आवश्यक है, उस कार्य में उनके अनुयायी बहुत पीछे हैं। यह भी कह सकते है कि अनके अनुयायी संगठित होकर पूरे आत्म विश्वास व शक्ति से प्रचार नहीं कर पा रहे हैं जिससे संसार में ईश्वर, जीवात्मा, मनुष्यों के कर्तव्य व व्यवहार विषयक अज्ञान, अन्धविश्वास, पाखण्ड, धर्मपरिवर्तन जैसी प्रवृत्तियां विद्यमान हैं। कुछ मतों की राजनैतिक महत्वकांक्षायें भी बहुत बढ़ी हुई हैं जिसमें वह धर्माधर्म, सत्यासत्य वा हिंसाहिंसा आदि का ध्यान न रखते हुए येन केन प्रकारेण अपने राजनैतिक लक्ष्य की प्राप्ति में लगे हुए हैं। दूसरी ओर भारत के धार्मिक मत व लोग हैं कि जो आज भी गहरी नींद में खतरों से अनभिज्ञ निद्रा व आलस्य से ग्रस्त हैं। यह लोग परस्पर असंगठित रहकर व अज्ञान व अन्धविश्वासों में लिप्त रहकर घातक प्रवृत्तियों के कार्यों में बाधक बनने के स्थान पर अपने व मानवता के शत्रुओं के सहयोगी बन रहे हैं। हम यह भी अनुभव करते हैं कि संसार के सभी मतों के एकीकरण व समरसता की बात तो बाद में है, पहले पौराणिक व आर्य समाजी ही परस्पर मिलकर सत्य के निर्णयार्थ कोई ठोस योजना बनायें व कार्य करें जिससे यह आपस में सभी धार्मिक विषयों में एक मत, एक विचार व एक सिद्धान्त हो जायें जिससे वेद व सनातन धर्म पर कोई संकट न आये। यदि संकट आये तो यह आने वाले संकटों पर विजय प्राप्त कर सकें। इस दिशा में आवश्यकता के अनुरूप कार्य नहीं हो रहा है जिससे हानि हो रही है और हमारे विरोधी मतों को लाभ हो रहा है जो गुप्त रूप से हमें समाप्त करना चाहते हैं। **अतः महर्षि दयानन्द के प्रथम स्वप्न कि विश्व के सारे मनुष्य का धर्म केवल एक है तथा उसके लिए प्रयास होने चाहिये का कार्य अवरूद्ध है।** महर्षि दयानन्द के अनुयायीययों को इस दिशा में सघन प्रचार कर अपने पौराणिक भाईयों को सहमत करने का हर सम्भव प्रयास करना चाहिये। साथ हि ऐसे प्रयास भी जारी रहने चाहिये जिससे संसार के सभी लोगों का सत्य वेद मत पर विश्वास उत्पन्न किया जा सके। यह सुनिश्चित है कि महर्षि दयानन्द और आर्य समाज

thearyasamaj.org

भूमिकाः— आज जब कि हमारे देश की सरकार "बेटी बचाओं आन्दोलन" चलाने पर मजबूर है, कारण विकष्त मानसिकता और सामाजिक परिस्थितियों के होते हुये माता के गर्भ में पल रही बेटियों को जन्म लेने से पूर्व ही मार दिया जाता है, यही नहीं हमारे देश में लाखों बेटियों को उनके माता–पिता अपने ऊपर एक बोझ समझते हैं, ऐसे में मैं अगर गर्व से कहता हूं कि मैं तीन पुत्रियों का पिता हूं जो कि मेरी मेरे लिए वरदान हैं व सर्वोत्तम पूंजी हैं, तो इस का श्रेय महर्षि दयानन्द सरस्वती व उनके द्वारा सन् 1875 में स्थापित आर्य समाज को है।

# 'मैं महर्षि दयानन्द सरस्वती का ऋणी हूं।'

**–भारतेन्दु सूद**

**आज जब कि हमारे देश की सरकार "बेटी बचाओं आन्दोलन" चलाने पर मजबूर है, कारण विकष्त मानसिकता और सामाजिक परिस्थितियों के होते हुये माता के गर्भ में पल रही बेटियों को जन्म लेने से पूर्व ही मार दिया जाता है। यही नहीं हमारे देश में लाखों बेटियां को उनके माता–पिता अपने ऊपर एक बोझ समझते हैं, ऐसे में मैं अगर गर्व से कहता हूं कि मैं तीन पुत्रियों का पिता हूं जो कि मेरी मेरे लिए वरदान हैं व सर्वोत्तम पूंजी हैं, तो इस का श्रेय महर्षि दयानन्द सरस्वती व उनके द्वारा सन् 1875 में स्थापित आर्य समाज को है।**

**महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने समय में कैंसर रोग के समान भयानक रूप से समाज को कमजोर करने वाली सभी सामाजिक बुराईयों के विरूद्ध युद्ध छेड़ा था। महर्षि ने उस समय जब कि भारत में महिलाओं की सामाजिक स्थिति अत्यन्त दयनीय थी, स्त्री पुरूषों की समानता, स्त्रियों की शिक्षा व उनके परिवार के संचालन में उनकी प्रमुख भूमिका को सही सन्दर्भ में प्रस्तुत कर कान्ति की थी। उन दिनों अधिकतर महिलायें अपने घरों में भी गुलामों की भांति रहा करती थी। महिलाओं और दलितों को वेदों और दूसरे शास्त्रों के अध्ययन से रोकने वाली अन्धविश्वासों से परिपूर्ण व्यवस्था को स्वामी जी ने अपने पैरों तले रौंद डाला और घोषणा की कि सभी स्त्रियों व दलितों को शिक्षा व वेदों के पढ़ने–पढाने का ब्राह्मणों के समान ही अधिकार है। उन्होंने कहा वेद सब के लिये हैं, सभी को वेदाध्ययन का अधिकार है जन्म–जाति, रंग भेद और भौगोलिक सीमाऐं इस में बाधा नहीं हो सकते।**

**उनका कहना था कि शिक्षा स्त्रियों की सभी समस्याओं के निवारण के लिए रामबाण औषधि है। हमारा समाज इस अशिक्षा के कारण ही दुर्बल हुआ है। आज महर्षि दयानन्द सरस्वती को स्वर्ग सीधारने के 132 वर्ष बाद यह सिद्ध हो चुका है कि उनके इस सम्बन्ध में कहे गये वचन सत्य थे। उनसे प्रेरणा लेकर, उनके भक्तों ने उनकी असामयिक मष्त्यु के कुछ ही समय बाद पंजाब में प्रथम महिला विद्यालय 'आर्य कन्या महाविद्यालय, जालन्धर' की सन् 1889 में स्थापना कर उसे पूरा किया। यही नहीं, उनके अनुयायियों द्वारा एक हजार से अधिक डी.ए.वी. संस्थायें एवं गुरूकुल देश के हर कोने में खोलें जो शिक्षा के प्रचार व प्रसार के कार्य में लगे हुये हैं और यही सभी शिक्षा संस्थायें उनके सच्चे स्मारक हैं।**

**मैंने उनसे सीखा कि माता व पिता को अपनी पुत्रियों का ध्यान रखने वाला सच्चा सहष्दय**

thearyasamaj.org

मित्र व संरक्षक होना चाहिये और यह भी जाना कि हम अपनी पुत्रियों को सबसे बड़ा यदि कोई उपहार दे सकते हैं तो वह शिक्षा एवं अच्छे संस्कार ही हैं। इस कार्य के लिए माता–पिता से अच्छा कोई विद्यालय नहीं हो सकता। वह सन्तान अतीव भाग्यशाली होती है जिसके अभिभावक माता–पिता धार्मिक हों व शिक्षा एवं संस्कारों से अलंकष्त व सुभूषित हों।

आज यदि मैं घर में बैठा हुआ या फिर यात्रा करता हुआ भी ईश्वर से जुड़ा हुआ रहता हूं तो यह भी स्वामी दयानन्द जी का ही प्रभाव है जिन्होंने बताया कि ईश्वर निराकार, अजन्मा सर्वव्यापक और सर्वान्तरयामी है। उसको कहीं बाहर ढूंढने की आवश्यकता नहीं है अपितु वह हमारे अन्दर ही है बात केवल अन्दर झांकने की है। हम उपासना द्वारा ईश्वर से जुड़ सकते हैं। चाहे मुझ पर कितनी वड़ी मुसीबत आन पड़े या बहुत बड़ा प्रलोभन हो, मैं किसी भी हालत में न किसी चमत्कारी बाबा के पास जाता हूं न जाऊंगा, यह महर्षि दयानन्द सरस्वती की शिक्षा का ही प्रभाव है।

एक अन्य लाभ जो मुझे उनकी शिक्षाओं से हुआ है, वह यह कि सत्य को सर्वोपरि स्वीकार करना और तर्क से सत्य की पहचान करना। इससे मैं सभी प्रकार के अन्ध विश्वासों से मुक्त हो गया। मुझे किसी धर्मगुरू या ज्योतिषी के पास किसी अच्छे दिन या मुहुर्त पूछने जाने की आवश्यकता नहीं है। मेरे लिए सभी दिन एक समान हैं व सभी दिन अच्छे दिन हैं और मेरे जीवन का वर्तमान समय मेरे लिए सबसे अच्छा समय है। जब कोई व्यक्ति सत्य को सर्वोपरि मान कर उसे अपने जीवन में धारण करता है तो वह स्वतः निर्भय व निडर हो जाता है। यह सत्य ही जीवन में प्रसन्नता, सुख व आनन्द का कारण है।

अन्त में मैंने उनसे यह जाना कि सभी मनुष्य जन्म से समान हैं। मनुष्य विद्या अध्ययन कर व शुभ गुणों को धारण कर ही ब्राह्मण बनता है जिसमें उसके जन्म व कुल आदि का महत्व नहीं होता। इस ज्ञान ने मुझे सभी प्रकार के पक्षपात व अन्यायपूर्ण व्यवहारों से बचाया है व मुझे सबल व सक्षम भी बनाया है।

---

का लक्ष्य सारे संसार को एक सत्य मत पर स्थिर करना व कृण्वन्तो विश्वमार्यम् वा विश्व को श्रेष्ठ विचारों, सिद्धान्तों, मान्यताओं व आचरण वाला बनाना है जिसमें वेदों के ज्ञान की प्रमुख भूमिका होगी। इसी से विश्व में शान्ति व सबका कल्याण होगा। महर्षि दयानन्द का कथन है कि विश्व स्तर पर एक धर्म, एक भाषा, एक भाव व सबका एक सुख–दुख के सिद्धान्त को स्वीकार करने पर विश्व में पूर्ण शान्ति हो सकती है।

महर्षि दयानन्द देश में जन्मना जाति व्यवस्था से भी व्यथित थे। उन्होंने इस जाति व्यवस्था को मरण व्यवस्था कहा है। इससे हमारा समाज व देश कमजोर हो रहा है। सभी अपने स्वार्थ व हितों को सामने रखकर कार्य करते हैं जो कि उचित नहीं है। ईश्वर की आज्ञा व ज्ञान के आधार पर सामाजिक व्यवस्था होनी चाहिये। किसी के साथ भेदभाव, पक्षपात व अन्याय नहीं होना चाहिये। सबको उन्नति के समान अवसर मिलने चाहिये और समाज में ऐसी भावना उत्पन्न की जानी चाहिये जिससे सब दूसरों की उन्नति में ही अपनी उन्नति समझे जिसका उदाहरण महर्षि दयानन्द व इसकी प्रथम पीढ़ी के लोगों का जीवन, आचरण व व्यवहार था। जन्मना जाति की प्रथा की समाप्ति के साथ विश्व से काले व गोरे अर्थात श्वेत–अश्वेत का भेद, अगड़े–पिछड़े का भेद, छोटे–बड़े व ऊंच–नीच की भावना भी खत्म होनी चाहिये। इसके लिए आर्य समाज को कमर कसनी चाहिये। महर्षि दयानन्द ने अपने समय में केवल एकांगी क्रान्ति नहीं की अपितु सर्वांणीण क्रान्ति की थी। उनके सभी विषयों पर विचार उनके सत्यार्थ प्रकाश व वेद भाष्य आदि ग्रन्थों में विद्यमान है। इनको अपनाने से ही देश, समाज व विश्व का कल्याण होगा। अतः समाज को नया वैज्ञानिक रूप देने के लिए जिसमें अन्य सभी सुधार के कार्यों के साथ उपर्युक्त दोनों सुधारों को भी मुख्य स्थान प्राप्त हो, पर ध्यान केन्द्रित करने व उसे गति देने की आवश्यकता है। हमारी नई पीढ़ी कुछ सीमा तक इस दिशा आगे बढ़ रही है परन्तु वह अनेक मुख्य व आवश्यक बातों की उपेक्षा भी कर रही है। अतः वेद व वेदों के विचार आज सर्वाधिक प्रासंगिक एवं महत्वपूर्ण हो गयें हैं जिनका मार्गदर्शन लेकर वेदानुरूप उन्नत व आधुनिक समाज का निर्माण किया जाना चाहिये।

thearyasamaj.org

# 'विवाह का उद्देश्य एवं वैदिक जीवन की श्रेष्ठता'

**–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

हमारा यह संसार वैदिक परम्परा के अनुसार 1,96,08,53,115 वर्ष पुराना है। इस संसार को बनाने वाले ईश्वर ने संसार को बनाकर सभी प्राणियों को बनाया और उसकी अन्तिम कषति थी **'मनुष्य'**। मनुष्य को बनाने के बाद इसके कर्तव्यों का ज्ञान कराना भी आवश्यक था। अतः ईश्वर ने इसकी पूर्ति के लिए मनुष्यों को स्वाभाविक ज्ञान के साथ अपनी समस्त विद्याओं का मनुष्योपयोगी आवश्यक ज्ञान प्रथम चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को प्रदान किया। ईश्वर सर्वव्यापक और सर्वान्तरयामी होने के कारण जीवात्माओं के भीतर भी विद्यमान रहता है, अतः जीवों को ज्ञान कराने में उसे किसी प्रकार की असुविधा या कठिनाई नहीं है। यह कार्य उसके लिए सरल व सहज है। हम भी अपने शरीर के अन्दर रहते हैं। शरीर को कुछ भी क्रिया करानी हो तो हम अपने मन व बुद्धि की सहायता से उस अंग विशेष को प्रेरणा करते हैं और वह अंग इच्छित कार्य करने लगता है। हमें पुस्तक पढ़नी है, तो हम मन में यह विचार करते है, मन आत्मा का आशय ग्रहण कर लेता है, शरीर उठकर खड़ा हो जाता है, पुस्तक के पास जाकर उसे लेता है और पढ़ने के स्थान पर बैठकर पुस्तक का इच्छित विषय खोल कर पढ़ने लगता है। इसी प्रकार जब ईश्वर को ज्ञान देना होता है तो वह जीवात्मा को ज्ञान देने का संकल्प करता है और वेदों का ज्ञान, जो कि ईश्वर का नित्य स्वाभाविक ज्ञान है, चार ऋषियों के भीतर आ जाता है। इन चार ऋषियों से अध्ययन व अध्यापन की परम्परा का आरम्भ होता है। यही परम्परा अद्यावधि चली आ रही है।

ईश्वर ने इस सषष्टि को स्वयं व प्रकषति से भिन्न एक अन्य नित्य सत्ता जीवात्माओं के सुख के लिए बनाया है। जीवात्मा की संख्या मनुष्य के ज्ञान में अनन्त है। ईश्वर एक है और प्रकषति सत्, रज व तम स्वरूपा है जो कि प्रलयावस्था में सारे आकाश में विस्तष्त वा फैली हुई होती है। सभी जीवात्मा परम धार्मिक स्वभाव के धनी ईश्वर की कष्पा से अपने कर्मो वा प्रारब्ध के अनुरूप भिन्न–भिन्न योनियों में जन्म लेकर अपने अस्तित्व को सफल करते हैं। जन्म का आधार पूर्व जन्म के शुभ–अशुभ कर्मों का कर्माशय या संचित कर्म होते हैं। इसी का नाम प्रारब्ध है। सभी जीवों के प्रारब्ध के अनुसार ईश्वर इन्हें जन्म देता है। जन्म लेकर जीव या तो पूर्व कर्मों के फलों को भोगते हैं तथा मनुष्य जन्म में नये कर्म भी साथ–साथ करते हैं। इस प्रकार से प्रारब्ध में से भोगने से पुराने कर्म घटते रहते हैं और नये कर्म उसमें जुड़ते रहते है। मष्त्यु का समय आने और मृत्यु होने पर कर्मों की कुछ पूंजी बची रह जाती है। यही कर्माशय वा प्रारब्ध जीवात्मा के भावी जन्म जिसे पुनर्जन्म कहते हैं, का कारण व आधार होता है। अब जीवों को जन्म देने के लिए ईश्वर को इस मष्त जीव के कर्मानुसार माता–पिता का चयन करना है। इसके लिए युवाओं व युवतियों में विवाह की कामना का होना आवश्यक है। युवाओं में यह कामना प्रकषति, जीवों के स्वभाव व परमात्मा प्रदत्त प्रेरणा आदि का परिणाम कहा जा सकता है। यदि युवाओं में विवाह की भावना या इच्छा नहीं होगी तो फिर यह संसार अवरुद्ध हो जायेगा। इसे जारी रखने के लिए विवाह का होना आवश्यक है।

जिस प्रकार से हमारे व अन्यों के भी माता–पिता अपनी पूर्व जन्म में मष्त्यु के बाद जीवात्म रूप में नये जन्म की इच्छा से आकाश में स्थित थे, तब उन सबके भावी माता–पिताओं, जो अपने समय के युवा थे, अपने स्वभाव व ईश्वर की इच्छा से विवाह के बन्धन में बन्धे थे और हमारे माता–पिता का जन्म सम्भव हुआ, इसी प्रकार से उन मष्त जीवों का जन्म हो जाने पर यह युवा होकर अपने माता–पिता की भूमिका में आ जातें हैं और यह जन्म–मरण का चक्र चलता है जिसमें विवाह की अहम व प्रमुख भूमिका होती है। **इस से यह सिद्ध होता है कि विवाह ईश्वर के सषष्टि को सतत चलाये रखने के लिए परमावश्यक है जिसमें जीवात्मा का स्वभाव, सुख व ईश्वर की इच्छा सम्मिलित है।** अतः विवाह एक युवा स्त्री के अपने गुण, कर्म, स्वभाव, पसन्द के अनुरुप युवा पुरुष से वा दोनों के सुखों की प्राप्ति व उनके भोग के लिए सखा, मित्र, पति–पत्नी भाव को प्राप्त हो आजीवन प्रेम–सम्बद्ध होने के बन्धन को कहते हैं। विवाह का करना एक युवक व युवती का

thearyasamaj.org

जीवन को सामान्य व सुख पूर्वक निर्वाह करने और साथ मिलकर समाज व देश हित के कार्यों को करने के लिए होता है। साथ हि इस संसार परस्पर मिल कर रहते हुए इसके उत्पत्तिकर्त्ता व नियन्ता ईश्वर को जानने व समझने तथा ईश्वर को ध्यान, चिन्तन व मनन द्वारा जानकर उसे प्रसन्न करने के लिए उसके गुण–कर्म–स्वभाव को जानकर उसके अनुरुप स्वयं को बनाकर सुख–समषद्धि व प्रजा की प्राप्ति और यथा समय सन्ध्या वा ध्यान आदि करते हुए बन्धनों को काटकर जन्म व मरण से मुक्त होने के लिए किया जाने वाला कर्म है।

विवाह का उद्देश्य दम्पत्ति का साथ–साथ संयमपूर्वक रहकर वेद द्वारा निर्धारित अपने कर्तव्यों को जानकर उसका पालन करने का नाम है। शरीर को स्वस्थ रखने के युक्ताहारविहार आदि उपाय करने के साथ धनोपार्जन आदि करना तथा मितव्यवता व सरल साधारण जीवन व्यतीत करने के साथ सत्यार्थ प्रकाश आदि सद्ग्रन्थों के स्वाध्याय व सच्चे महापुरूषों के उपदेशों को श्रवण करते हुए जीवन को व्यतीत करना है। सद्गृहस्थ के लिए करणीय पंच महायज्ञों का यथाशक्ति करना भी कर्तव्य वा धर्म है। यह हैं सन्ध्योपासना अर्थात् ईश्वर के स्वरूप, गुणों का ध्यान व उससे प्रार्थना आदि करना, यज्ञ–अग्निहोत्र जिसमें वायु शुद्धि सहित देवपूजा, संगतिकरण तथा दान करना होता है, तीसरा व चौथा यज्ञ पितृयज्ञ व अतिथियज्ञ है जिसमें माता–पिता–आचार्य व विद्वान अतिथियों की श्रद्धापूर्वक सेवा व सम्मान कर उन्हें सन्तुष्ट रखना होता है। सभी प्राणियों के प्रति दया की भावना तथा उनके रक्षण व पोषण में सहयोग करना ही प्राणि या बलिवैश्वदेवयज्ञ है। इन यज्ञों को करते हुए धर्मपूर्वक यथा समय पितृ ऋण आदि से उऋण होने के लिए योग्य सन्तानों को जन्म देना व पश्चात उनका पालन पोषण कर उन्हें आस्तिक, स्वस्थ व ज्ञान सम्पन्न कर समाज व देशहित के कार्यों के योग्य बनाना भी माता–पिता का कर्तव्य व दायित्व है। इस प्रकार कर्तव्यों का पालन करते हुए सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करना वैदिक धर्म सम्मत होता है।

वैदिक धर्म में गषृस्थ जीवन की अवधि 25 वर्ष निर्धारित है। 50 वर्ष की अवस्था होने पर वानप्रस्थ तथा 75 वर्ष होने पर संन्यास का भी प्राविधान है। वैदिक जीवन पद्धति व अन्य पद्धतियों में मौलिक भेद यह है कि वैदिक पद्धति मनुष्य को जीवन मुक्ति अर्थात् जन्म–मरण के बन्धनों व दुःखों से मुक्ति की ओर ले जाती है जबकि अन्य पद्धतियां मनुष्य को सुख व दुखों का भोग कराकर परजन्म में सामान्य मनुष्य जीवन या निम्न जीवयोनियों में विचरण कराती हैं जहां अनुमान है कि सुख कम व दुःख अधिक हैं। अन्य जीवन पद्धतियों में ईश्वर व जीवात्मा का सत्य ज्ञान व उपासना पद्धति की उत्कर्षता व यथार्थता आदि गुण न होने के कारण वहां मनुष्य जीवनमुक्ति की सम्भावना तो दिखती ही नहीं। वहां उनके सिद्धान्तों के अनुसार कितना भी धर्म–कर्म कर लिया जाये, उसका परिणाम पुनर्जन्म ही सिद्ध होता है क्योंकि ईश्वर साक्षात्कार तो योग विधि से ध्यान करने व समाधि प्राप्ति पर ही होता है जो कि मुक्ति का आधार है। जीवन में मांसाहार, मदिरापान, सत्य ज्ञान की उपेक्षा व सीमित चिन्तन व सोच के कारण पक्षपात आदि करना जैसे कष्त्यों से मनुष्य जीवन का भावी जन्म उन्नत होने की सम्भावनायें बहुत ही कम दषष्टिगोचर होती हैं जिसका कारण ईश्वर का न्यायकारी होना व किसी को किसी प्रकार की रियायत या छूट न देना आदि कर्मफल दाता ईश्वर का स्वरुप है। आश्चर्य एवं दुःख की बात है कि संसार के सभी लोग इस सत्य सिद्धान्त को भूले हुए हैं।

अतः वैदिक विवाह मनुष्य को संयम पूर्वक जीवन व्यतीत करते हुए धर्माचरण पूर्वक प्रजा वा सन्तान उत्पन्न करने के साथ यथार्थ उपासना विधि से ईश्वर को प्रसन्न करते हुए देश, समाज तथा सभी प्राणियों के प्रति दया व कल्याण की भावना को रखकर जीवन को भौतिक व आध्यात्मिक सुख के साथ मुक्ति की प्राप्ति भी कराता है। इसका विवेचन दर्शनकारों ने बहुत ही तर्क व युक्ति पूर्वके किया। सभी मनुष्यों को दर्शनों का अध्ययन अवश्य करना चाहिये जिससे सन्मार्ग दर्शन व कर्तव्य बोध हो सके। यह धारणा करनी चाहिये कि ईश्वर एक है, उसके बनाये व रचे हुए सभी मनुष्य भी एक है व उसके पुत्र व पुत्रियों के समान हैं। जो इस भावना को लेकर जीवन व्यतीत करेगा वही ईश्वर की दषष्टि में सफल होगा। अतः वैदिक विवाह ज्ञान पूर्वक जीवन का निर्वाह कर इससे होने वाले लाभों को हस्तगत कराता है, सभी गषृस्थियों को इसका अभ्यास करना चाहिये।

**–मनमोहन कुमार आय**

thearyasamaj.org

# 'जीवन की सफलता का मूल मन्त्र असतो मा सद् गमय'

**–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

भारतीय धर्म व संस्कषति में वष्हदारण्यकोपनिषद् के वाक्य **'असतो मा सद् गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय, मष्त्योर्मा अमष्तं गमयेति'** का विशेष महत्व है। **'असतो मा सद् गमय'** में ईश्वर से प्रार्थना की गई है कि मैं सत्य मार्ग पर चलूं। इसका अर्थ है कि मैं असत्य मार्ग पर न चलूं। प्रश्न उत्पन्न होता है कि सत्य मार्ग पर चलना आवश्यक क्यों है और असत्य मार्ग पर न चलना जरूरी क्यों है? सत्य मार्ग को ऋजु मार्ग भी कहते हैं। ऋजु मार्ग सीधा मार्ग होता है और अन्य मार्ग लम्बे व टेढ़े होने के साथ उन पर चलने से यात्री मार्ग भटक कर मंजिल से दूर चले जाते है। सत्य मार्ग वह मार्ग होता है जिस पर चल कर अन्ततः मंजिल या लक्ष्य की प्राप्ति निश्चित होती है। असत्य मार्ग उल्टा मार्ग है जिससे हम लक्ष्य के विपरीत चलते हैं या लक्ष्य से दूर होते जाते हैं। अब इस सूक्ति में जिस सतपथ की बात कही गई है, वह कौन सा पथ है और उस पर चल कर हम कहां पहुंचेंगे, यह विचार करना प्रासंगिक एवं आवश्यक है। हम मनुष्य हैं और मनुष्य नाम हमारे मननशील होने वा प्रत्येक कार्य को सत्य वा असत्य का विचार करके करने के कारण मिला है। मनन करने पर हमें ज्ञात होता है कि जीवन कर्मों को करने का नाम है। कर्म दो प्रकार के होते हैं जिन्हें अच्छा व बुरा, सत्य व असत्य, शुभ व अशुभ अथवा पुण्य वा पाप कह सकते हैं।

अब यह देखना है कि सत्य कर्म करने से क्या प्राप्त होता है और असत्य या पाप करने करने से मनुष्य को क्या लाभ व हानि होती है। सत्य कर्म ऐसा है कि एक विद्यार्थी तपपूर्वक अध्ययन कर परीक्षा दे तो उसे उसके पुरूषार्थ के अनुरूप फल व सफलता मिलती है और जो विद्यार्थी अध्ययन की उपेक्षा कर प्रतिगामी व विपरीत कार्य करता है, वह असफल होता है। इसी प्रकार से सत्य कर्मों को करके उन्नति व असत्य कर्म व कार्यों को करके अवनति होती है। उन्नति भी दो प्रकार की कह सकते हैं। एक तो सांसारिक उन्नति जिसमें सुख–सुविधाओं की वस्तुओं की प्राप्ति व धन सहित शारीरिक उन्नति को भी सम्मिलित कर सकते हैं और दूसरी उन्नति आध्यात्मिक उन्नति होती है। आधात्मिक उन्नति का अर्थ है कि यदि हम संसार की उत्पत्ति, स्थिति व प्रलय की अवस्था पर विचार करते हैं तो हमें यह सृष्टि परमाणुओं से बनी हुई दृष्टिगोचर होती है। इन परमाणुओं को हम अनादि व मूल प्रकृति, अनुत्पन्न, नित्य, अजन्मा, सनातन व अविनाशी कह सकते हैं। **मूल प्रकृति के इन परमाणुओं का संयोग कराने वाला कोई अवश्य होना चाहिये जिससे सूर्य, चन्द्र, पृथिवी व अन्य सभी पदार्थों की उत्पत्ति हो सके।** वह सत्ता ईश्वर है। इससे ईश्वर का अस्तित्व होना सिद्ध होता है। इस पर निरन्तर व नियमित रूप से चिन्तन करने पर ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति का ज्ञान होता है जिससे हमारी ईश्वर से निकटता होकर हम उसकी उपासना में संलग्न हो जाते हैं। इसका फल हमारे गुण, कर्म व स्वभाव में परिवर्तन होकर वह ईश्वर के अनुरूप बन जाते हैं। इन शुभ कर्मों की वृद्धि और पूर्व पाप व असत्य कर्मों का भोग हो जाने पर मनुष्य की इस जन्म व परजन्म में उन्नति होती है। सत्य मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति का भावी जन्म अच्छी योनि, अच्छे कुल व अच्छे प्रदेश व लोक में होना शास्त्र प्रमाण व तर्क से सिद्ध होता है। कालान्तर में सत्य व शुभ कर्मों की वृद्धि व ईश्वर से अति–निकटता वा असम्प्रज्ञात समाधि की प्राप्ति होने पर जीवात्मा वा मनुष्य अशुभ कर्म से निवृत होकर जन्म मरण से छूट जाता है। इस अवस्था का नाम मुक्ति होता है जिसका वर्णन हमारे शास्त्रों और महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों में उपलब्ध है। इसके विपरीत असत्य मार्ग पर चलने व अशुभ कर्म करने से मनुष्य बन्धनों में फंस कर, अवनति को प्राप्त होकर अपने वर्तमान व भावी जीवन अर्थात् पुनर्जन्म को बिगाड़ लेता है। अतः **'असतो मा सद् गमय'** का सन्देश जीवन को उन्नति के पथ पर आरूढ़ करना व अपनी वर्तमान स्थिति को सुधार कर लक्ष्य व लक्ष्यों की प्राप्ति है।

संसार में अनेक महापुरुषों के जीवन हमें ज्ञात हैं। यह सब 'असतो मा सद् गमय' के ही प्रतीक हैं। संसार में जिन जन्म लेने वाले व्यक्तियों की चर्चा नही की जाती, वह प्रायः इस मन्त्र–विचार–सूक्ति के विपरीत आचरण करने वाले सामान्य कोटि के लोग होते हैं। महर्षि दयानन्द संसार के सभी मनुष्यों से भिन्न महापुरूष थे। उन्होंने संस्कष्त के अलौकिक आर्ष व्याकरण के अध्ययन के साथ अपने समय में उपलब्ध वेद, शास्त्रीय ग्रन्थों व सहस्त्रों अन्य ग्रन्थों को भी पढ़ा व समझा था। उन्होंने योग का सफल अभ्यास कर असम्प्रज्ञात समाधि को भी सिद्ध किया था। अपने गुरू प्रज्ञाचक्षु

thearyasamaj.org

दण्डी विरजानन्द सरस्वती से आर्ष व्याकरण एवं शास्त्रों का अध्ययन करने के बाद उनकी प्रेरणा से उन्होंने संसार को सत्य मार्ग पर चलाने की प्रतीज्ञा की थी और उसे प्राणपण से पूरा करने का प्रयास किया। सत्य पथ पर चलते हुए उन्होंने लगभग 18 बार विषपान किया परन्तु सतपथ का मार्ग नहीं छोड़ा। उनका सारा जीवन **'असतो मा सदगमय'** का जीता जागता व सर्वोत्तम उदाहरण है। जो विशेषता उनके जीवन में है वह अन्य महापुरुषों के जीवन में देखने को नहीं मिलती। उनके जीवन चरित्र का अध्ययन कर तथा उसे आचरण में लाकर भी हम अपने जीवन को उन्नत बना सकते हैं। उन्होंने इसी उद्देश्य से सत्यार्थ प्रकाश नाम से संसार का अनूठा व अपूर्व ग्रन्थ लिखा है। 14 समुल्लासों में रचित इस ग्रन्थ के प्रथम 10 समुल्लास असतो मा सद्–गमय का कियात्मक रूप प्रस्तुत करते हैं तथा अन्त के 4 समुल्लास **'तमसो मा ज्योतिर्गमय'** का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। इस ग्रन्थ का अध्ययन करना समुद्र में एक गोता लगाना और बहुमूल्य मोतियों को पाने के समान है और अन्यत्र श्रम करना मानों सारा जीवन गवांकर कौड़ियों को पाना है। सभी मनुष्यों को न्यूनातिन्यून एक बार निष्पक्ष होकर इस ग्रन्थ का अध्ययन अवश्य करना चाहिये। सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन करने से वेदों के सत्य स्वरुप का ज्ञान भी होता है। वेद स्वयं भी **'असतो मा सद् गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय अमष्तो मा अमष्तं गमय'** का ही ज्ञान प्राप्त कराकर इनकी प्राप्ति के साधनों का भी मार्ग प्रशस्त करते हैं। वेदेतर संसार में जितने भी धार्मिक ग्रन्थ हैं उनमें सत्य भी है और बहुत कुछ असत्य भी है, जिसका दिग्दर्शन सत्यार्थ प्रकाश में कराया गया है। अतः वेदों व सत्यार्थ प्रकाश के आलोक में सभी ग्रन्थ सत्यासत्य को सामने रखकर विचारणीय व संशोधनीय है। यह ऐसा ही है जैसे हम ज्ञान व विज्ञान के क्षेत्र में नित्यप्रति इसे अपडेट व संशोधित करते रहते हैं। यदि ऐसा न करते तो संसार में जो आज उपलब्धियां प्राप्त हुई हैं, वह न हुई होतीं। यही कार्य धार्मिक ग्रन्थों में भी होना चाहिये अर्थात सत्य का अनुसंधान और तदानुसार संशोधन।

सत्य का अनुसंधान कर महर्षि दयानन्द ने मानव समाज की सर्वांगीण उन्नति का एक नियम बनाया। वह नियम है कि **सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।** यह नियम भी असतो मा सद् गमय व तमसो मा ज्योतिर्गमय का ही रूपान्तर व पर्याय है। इसी को भिन्न प्रकार से उन्होंने एक अन्य नियम में भी कहा है कि **सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिये।** अविद्या का नाश और विद्या की वष्द्धि करनी चाहिये यह भी असतो मा सद् गमय का ही एक रूप है। इसी कम में सभी मतों के अनुयायियों के लिए यह भी विचारणीय है कि क्या हम, सभी व कोई एक भी, कर्म के फलों से बच सकते हैं? इसका उत्तर है कदापि नहीं। मांसाहार, अण्डे का सेवन, सामिष भोजन, धूम्रपान, मदिरापान, असत्य भाषण व व्यवहार एवं दूसरों का अपकार करना अशुभ व अवैदिक कर्म हैं। इन कर्मों को करके हम कर्म बन्धन में फंसते हैं। हमें यह भी जानना है कि पुनर्जन्म का सिद्धान्त केवल हिन्दुओं, सिखों, बौद्धों व जैनियों के लिए ही नहीं है अपितुयह नियम व सिद्धान्त संसार के सभी मनुष्यों व मनुष्येतर प्राणियों पर भी लागू होता है। इसका कारण है कि संसार में ईश्वर एक है। वही सब मनुष्यों व प्राणियों को उनके कर्मों व प्रारब्ध के अनुसार जन्म देता है। उसका पुनर्जन्म का सिद्धान्त भी सभी मतों व धर्म के लोगों के लिए एक समान है। अतः जीवन की आध्यात्मिक व भौतिक उन्नति के लिए वैदिक मान्यताओं व सिद्धान्तों किंवा वैदिक धर्म को अपनाना सभी के लिए आवश्यक है जिससे हम मनुष्य जीवन के सर्वोत्तम पुरुषार्थ धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष से वंचित न हों। निर्णय करना हमारे व सभी मतों के मानने वाले अनुयायियों के हाथ में है। इसी कम में यह भी विचार व तर्क सिद्ध है कि संसार में स्वर्ग, जन्नत, नरक व दोजख आदि सब इस पष्थिवी व इसके समान अन्य लोकों पर ही है। अच्छे कर्मों का फल सुख है और सुख विशेष ही स्वर्ग है। इसी प्रकार अशुभ कर्मों का परिणाम दुःख है और उसका परिणाम नरक आदि भोग हैं। जीवात्मा जन्म लेकर ही सुख व दुःख का भोग कर सकता है। मष्त्यु व अगले जन्म के बीच जीवात्मा को कोई सुख व दुख नहीं होता। यह अवस्था एक प्रकार से सुषुप्ति की अवस्था होती है जिसमें जीवात्मा को इन्द्रियों से अनुभव होने वाले सुख व दुख अनुभव नहीं होते। इस विवेचना से यह निष्कर्ष निकलता है कि वेदाध्ययन सभी को अवश्य करना चाहिये अन्यथा हमें उन्नति व मुक्ति का लाभ नहीं होगा और हम बार–बार जन्म लेकर मष्त्यु को प्राप्त होते रहेंगे।

यजुर्वेद का एक प्रमुख मन्त्र है, **'ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रन्तन्न आसुव।।'** इस मन्त्र में सर्वशक्तिमान ईश्वर से प्रार्थना की गई है कि ईश्वर मेरे सभी दुगुर्ण, दुर्व्यस्न और दुःखों को दूर करे और जो कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव व पदार्थ हैं, वह सब हमें प्राप्त कराये। यह प्रार्थना भी असतो मा सद् गमय की पूरक होने से सत्य मार्ग पर चलने के लिए प्रोत्साहित करती है। **आईये, जीवन को सत्य मार्ग पर चलाते हुए जीवन से तम व अन्धकार को दूर करें और अमष्त वा मोक्ष की प्राप्ति करें।**

thearyasamaj.org

# वैदिक कन्या महाविद्यालय, मांदापुर, जिला मेदक को १०१ हज़ार रुपये की सहायता

आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय सदस्य दंपत्ति श्री एवं श्रीमती धनलक्ष्मी राजारामजी ने वैदिक कन्या महाविद्यालय, मांदापुर, जिला मेदक को ५१ हज़ार रुपये की सहायता कर एक अच्छा उदाहरण पेश किया। गुरुकुल की आचार्या सुश्री सुनीतिजी को सभा भवन में शॉल से सम्मानित कर ५१ हज़ार रुपये का चेक प्रदान किया गया। साथ ही आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाना की ओर से भी ५० हज़ार रुपये की दानराशि चेक के द्वारा प्रदान कर गुरुकुल की आचार्याजी को प्रोत्साहित किया गया। सभा प्रधान श्री विठ्ठलरावजी आर्य की अध्यक्षता में आयोजित इस छोटे से समारोह में सभा के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

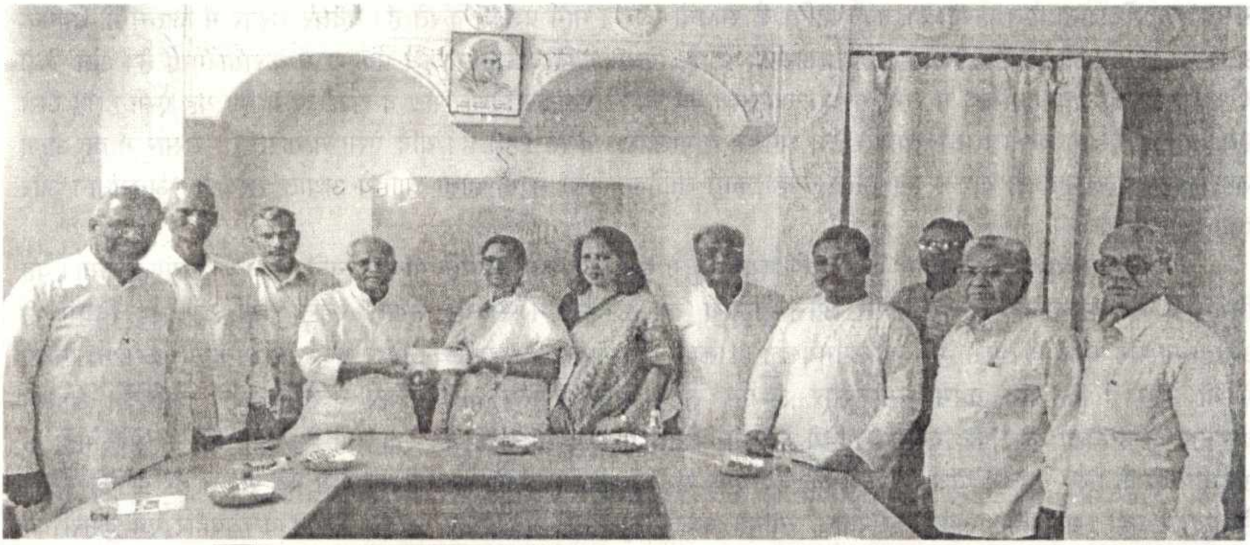

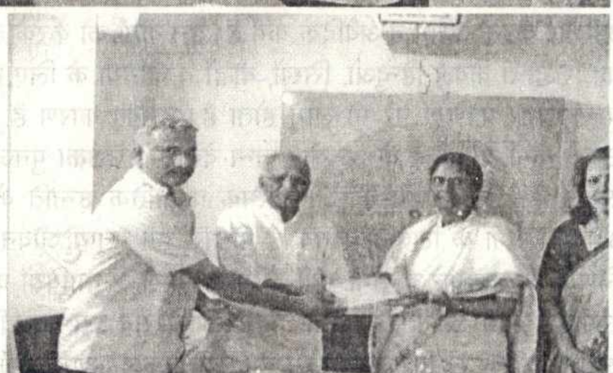

thearyasamaj.org

# హైదరాబాద్ కా ముక్తి సంఘర్ష్

## (హిందీ భాషలో)

(నిరంకుశ నిజాం అత్యాచారాలకు వ్యతిరేకంగా పోరాడిన ఆర్య సమాజ చరిత్ర)

గ్రంథకర్త : డాక్టర్ ఆనంద్ రాజ్ వర్మ

ప్రతి పుస్తకము యొక్క మూల్యము : రూ. 120/-

5 పుస్తకములు కొన్న వారికి తక్కువ రేటుతో అనగా రూ. 80/- పతి పుస్తకము ఇవ్వబడును

ప్రచారార్థము ఆర్యసమాజ అధికారులు, ఔత్సాహికులు, అధిక సంఖ్యలో ప్రతులను కొనుగోలు చేసి ఇంటింటా చదువరులైన యువకులకు, విద్యార్థులకు అందజేసి సహకరించాలని విజ్ఞప్తి.

**లభించు స్థలము :**
ఆర్య ప్రతినిధి సభ కార్యలయము
సుల్తాన్‌బజారు - హైదరాబాదు.
సంప్రదించుటకు ఫోన్ నెంబర్లు :
040-2475 6983, 66758707
అధిక ప్రతుల కొనుగోలుకై తగిన రెటుకు లభించును. 9849560691

# हैदराबाद का मुक्ति संघर्ष

(निरंकुश निज़ामशाही के दौर में अन्याय और अत्याचारों के विरुद्ध आर्य समाज के संघर्ष का इतिहास)

लेखक : डॉ. आनन्द राज वर्मा

मूल्य : रु. १२०/- प्रति पुस्तक

अधिक पुस्तकें खरीदने पर रु. ८०/- प्रति पुस्तक

प्रचारार्थ आर्य समाज के अधिकारी एवं उत्साही कार्यकर्ता अधिकाधिक प्रतियों को ख़रीद कर घर-घर, पाठशाला, युवावर्ग एवं छात्रों में वितरित कर सहयोग दें।

**प्राप्ति स्थान : कार्यालय**
आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाणा
सुल्तान बाज़ार - हैदराबाद
संपर्क सूत्र : फोन. नं. :
040-2475 6983, 66758707
9849560691

thearyasamaj.org

చదవండి **విజ్ఞప్తి** చదివించండి.

**ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆం.ప్ర - తెలంగాణ**

నూతన పుస్తక ప్రచురణలు

# ఆర్య సమాజమనగానేమి?

హిందీ మూలము :మహాత్మా నారాయణ స్వామి గారు

"ఆర్య సమాజ్ క్యాహై?"

తెలుగు అనువాదము : శ్రీ అనంతార్య గారు

ప్రతి పుస్తకము యొక్క మూల్యము రూ. 30/- 10 పుస్తకములు కొన్న వారికి తక్కువ రేటుతో అనగా రూ. 20/- పతి పుస్తకము ఇవ్వబడును

ప్రచారార్థము ఆర్యసమాజ అధికారులు, ఔత్సాహికులు, అధిక సంఖ్యలో ప్రతులను కొనుగోలు చేసి ఇంటింటా చదువరులైన యువకులకు, విద్యార్థులకు అందజేసి సహకరించాలని విజ్ఞప్తి.

**లభించు స్థలము : ఆర్య ప్రతినిధి సభ కార్యలయము సుల్తాన్‌బజారు, హైదరాబాదు.**

**సంప్రదించుటకు ఫోన్ నెంబర్లు :**

**040-2475 6983, 66758707**

**అధిక ప్రతుల కొనుగోలుకై తగిన రెటుకు లభించును. 9849560691**

पढिए **आर्य प्रतिनिधि सभा**

आ.प्र. तेलंगाना के

# आर्य समाजमनगानेमि?

**वैदिक धर्म, आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द का परिचय.**

**मूल हिन्दी रचनाः महात्मा नारायण स्वामी कृत**

## आर्य समाज क्या है ?

का तेलुगु अनुवाद. अनुवादक श्री अनन्तार्य जी

मूल्य : रु. ३०/- प्रति पुस्तक

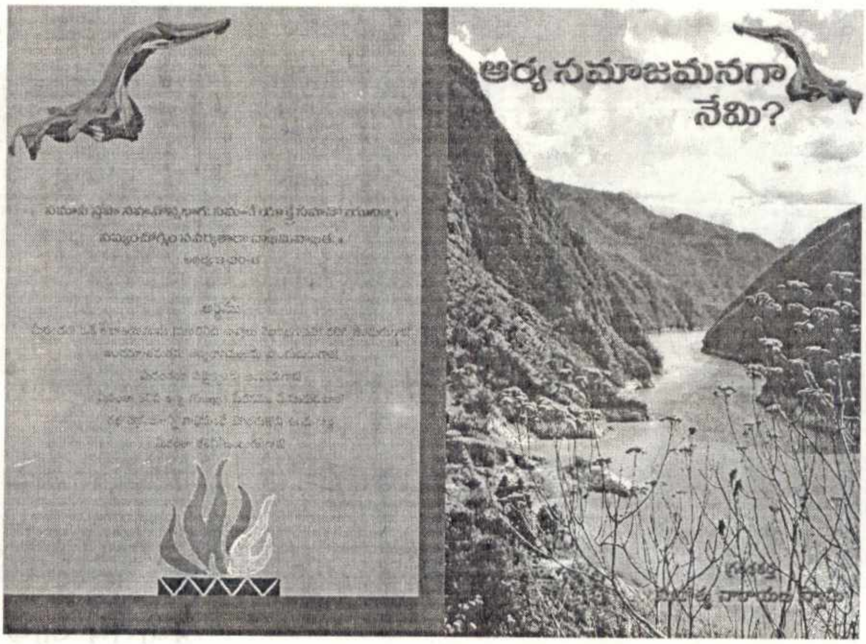


**अधिक पुस्तकें खरीदने पर रु.२०/-प्रति पुस्तक**

प्रचारार्थ आर्य समाज के अधिकारी एवं उत्साही कार्य कर्ता अधिकाधिक प्रतियों को ख़रीद कर घर-घर, पाठशाला, युवावर्ग एवं छात्रों में वितरित कर सहयोग दें।

**प्राप्ति स्थान : कार्यालय आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. - तेलंगाणा, सुल्तान बाज़ार - हैदराबाद**

**संपर्क सूत्र : फोन. नं. : ०४०-२४७५६९८३, ०४०-६६७५८७०७, ०९८४९५६०६९१**

# आर्यसमाज की ओर से श्रद्धांजलि सभा

## KAKA IS NO MORE NOW

स्वर्गीय श्री जी. वेंकटस्वामीजी की स्मृति में आर्यसमाज जंगममेट की ओर से श्रद्धांजलि सभा और शांति यज्ञ का आयोजन जंगममेट आर्य समाज के परिसर में किया गया। जिसमें श्री जी. वेंकटस्वामीजी के सुपुत्र, पूर्वमंत्री श्री विनोद कुमारजी, पूर्व सांसद श्री विवेकजी, उनके दामाद पूर्वमंत्री श्री शंकररावजी व परिवार के अन्य सदस्यों ने भाग लिया। सभा में अधिक संख्या में लोगों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर श्री वेंकटस्वामीजी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि व्यक्त की।श्रद्धांजलि सभा की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री विट्ठलराव अध्यक्षता में हुई, जिसमें डॉ. टी.वी. नारायणजी ने भी भाग लिया। सभा का संचालन श्री टी. सत्यनारायणजी ने किया।

ARYA SAMAJ LEADERS AND FAMILY MEMBERS PAID TRIBUTE TO VETERAN CONGRESS LEADER HAVING ARYA SAMAJI BACK GROUND ASAN YOUNG CRUSSADER AGAINST THE THEN RAZAKARS SRI G. VENKAT SWAMI (KAKA) PASSED AWAY ON 22nd DECEMBER 2014

चित्र में परिवार के सदस्य हवन करते हुए, वेंकटस्वामीजी के पुत्र श्री विनोदजी, श्री विवेकजी, उनके दामाद श्री शंकररावजी, सभा प्रधानजी, डॉ. टी.वी. नारायणजी सभा को संबोधित करते हुए।

thearyasamaj.org
Date of Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month
आर्य जीवन 3-02-2015 Registered-Reg. No.HD/783/2015-17 RNI.No.52990/93

ఆర్య జీవన్
హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక
ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, D.No. 4-2-15
మహర్షి దయానంద మార్గము సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్-95,
phone No. 040 - 24753827, 66758707, Fax: 040-2455794
సంపాదకులు - విఠల్‌రావు ఆర్య ప్రధాన్ సభ

# గురుకుల్ ట్రస్ట్ భూములపై తీర్పును పునస్సమీక్షించలేం: హైకోర్టు

ఈనాడు, హైదరాబాద్: రంగారెడ్డి జిల్లా శేరిలింగంపల్లి మండల పరిధిలో కోట్ల రూపాయల విలువ చేసే 627 ఎకరాల గురుకుల్ ట్రస్టు భూములకు సంబంధించి హైకోర్టు ధర్మాసనం గతంలో ఇచ్చిన తీర్పును పునస్సమీక్షించడానికి హైకోర్టు తాజాగా నిరాకరించింది. గత తీర్పును పునస్సమీక్షించాలని అభ్యర్థిస్తూ తెలంగాణ ప్రభుత్వం, కొందరు ప్రైవేటు వ్యక్తులు దాఖలు చేసిన వ్యాజ్యాల్ని కొట్టివేసింది. ఉమ్మడి హైకోర్టు న్యాయమూర్తి జస్టిస్ విలాస్ వి అఫ్జల్ పుర్కర్, జస్టిస్ బి.శివ శంకరరావులతో కూడిన ధర్మాసనం శుక్రవారం ఈ మేరకు ఆదేశాలు జారీచేసింది.

శేరిలింగంపల్లి మండల పరిధిలోని గురుకుల్ ట్రస్ట్ భూవివాదంపై దాఖలైన వ్యాజ్యాలపై గతంలో హైకోర్టు ధర్మాసనం సుదీర్ఘ విచారణ చేపట్టింది. "ఆ భూములు ట్రస్ట్‌కే చెందుతాయి. వాటిని కొనుగోలు చేసి, క్రమబద్ధీకరణకు దరఖాస్తు చేసుకొన్నవారికి వాటిని క్రమబద్ధీకరించాలి. అలా వచ్చిన సొమ్ముతో నగర శివార్లలో అంతే విస్తీర్ణాన్ని కొనుగోలు చేసి ట్రస్ట్‌కు ఇవ్వాలి" అని ప్రభుత్వాన్ని ఆదేశిస్తూ 2012 సెప్టెంబర్ 12న తీర్పు ఇచ్చింది. ప్రస్తుత పరిస్థితుల్లో ట్రస్ట్‌కు ప్రత్యామ్నాయంగా మరోచోట భూములను సమకూర్చడం సాధ్యం కాదని, ఆ భూములు పట్టణ భూగరిష్ఠ చట్టం ప్రకారం ప్రభుత్వానికి చెందుతాయని ఈ అంశాల్ని దృష్టిలో ఉంచుకొని గతంలో ఇచ్చిన తీర్పును పునస్సమీక్షించి తగిన ఆదేశాలు జారీచేయాలని అభ్యర్థిస్తూ తెలంగాణ ప్రభుత్వం రివ్యూ పిటిషన్ దాఖలు చేసింది. కొంతమంది ప్రైవేటు వ్యక్తులు సైతం ఆ తీర్పును పునస్సమీక్షించాలని కోరారు. ఈ వ్యాజ్యంపై ధర్మాసనం ఇటీవల సుదీర్ఘ విచారణ చేపట్టింది. పట్టణ భూగరిష్ఠ చట్టాన్ని పరిగణనలోకి తీసుకొని అప్పటి ధర్మాసనం తీర్పు వెల్లడించిందని పిటిషనర్ల తరఫు సీనియర్ న్యాయవాది కోర్టుకు తెలిపారు. ఆ చట్టాన్ని కేంద్రం ఉపసంహరించుకొందని చెప్పారు. ఈ నేపథ్యంలో గతంలో ఇచ్చిన తీర్పును పునస్సమీక్షించి తగిన ఉత్తర్వులు జారీ చేయాలని కోరారు. తెలంగాణ ప్రభుత్వం తరఫున ఏజీ పిటిషనర్ల వాదనలనే పునరుద్ఘాటించారు. ట్రస్ట్ ఆధీనంలో ఉన్న భూములను నిర్దేశిత ప్రయోజనాల కోసం వినియోగించలేదన్నారు. వాదనలు విన్న ధర్మాసనం గత తీర్పును పునస్సమీక్షించలేమంటూ శుక్రవారం తీర్పు చెప్పింది.

# गुरुकुल ट्रस्ट की ज़मीनों पर दूरगामी फैसला

हैदराबाद, 12 सितम्बर-(मिलाप ब्यूरो)
..-प्रदेश उच्च न्यायालय के कार्यवाहक मुख्य ..धीश पिनाकी चन्द्र घोष व न्यायाधीश विलास अफजलपुरकर ने गुरुकुल ट्रस्ट की ज़मीनों के .. में आज एक दूरगामी फैसला सुनाया। अदालत ..रुकुल ट्रस्ट, जिसमें अयप्पा सोसाइटी व अन्य ..लोनियाँ स्थित हैं, को राज्य सरकार द्वारा ..मितीकरण के नाम पर की गई कार्यवाही को ..कनार कर पुनः उक्त ज़मीनों का मालिक करार ..। साथ ही ट्रस्ट की चैरिटेबल गतिविधियों को .. रखने का मार्ग भी प्रशस्त किया।

..खण्डपीठ ने जनहित में सरकार के आदेश को ..ती देने वाली याचिकाओं का निपटारा करते हुए ..व्यवस्था की। सरकारी आदेश के चलते ट्रस्ट को ..ी ज़मीनें खोनी पड़ी थी। गौरतलब है कि गुरुकुल ..का गठन अनाथ बच्चों को दो जून की रोटी मुहैया ..न, अशिक्षितों को शिक्षा का अवसर प्रदान करने, ..क्षा व सनातन धर्म को आगे बढ़ाने जैसे वैश्विक उद्देश्यों के लिए किया गया था। ट्रस्ट के अधीन काफी भूमि है, जिसे सरकार ने अर्बन लैंड सीलिंग (यूएलसी) कानून के तहत छूट प्रदान की थी। इसके चलते ट्रस्ट अपने अधीन भूमि का मालिक था। इस बीच, ज़मीन बेचने संबंधी कुछ गंभीर आरोप सामने आये थे। सरकार ने इन आरोपों के मद्देनज़र ट्रस्ट को दी गई सारी रियायतें वापस ले ली थी। सरकारी निर्णय के कारण ट्रस्ट की ज़मीन यूएलसी कानून के मुताबिक अधीक हो गयी थी। इस भूमि पर कब्जा किये लोगों, संस्थाओं ने नियमितीकरण के लिए सरकार से आवेदन कर उक्त ज़मीनें खरीद ली थी। इस बीच दो खण्डपीठों ने सम्पत्तियों पर ट्रस्ट के अधिकार को बरकरार रखा था। अब जनहित याचिका में भी सरकार द्वारा ट्रस्ट को दी गई छूट वापस लिये जाने व सम्पत्ति पर ट्रस्ट के अधिकार को खत्म करने को चुनौती दी गई थी। अदालत ने कहा कि धर्मस्व आयुक्त के नेतृत्व में वरिष्ठ अधिकारियों की एक समिति सरकार द्वारा वसूली गयी राशि व ट्रस्ट के नाम पर खरीदी गयी अतिरिक्त भूमि के मामले देखेगी।


Editor: VithalRao Arya • acharyavithal@gmail.com
సంపాదకులు : విఠల్‌రావు ఆర్య, ప్రధాన్, ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ సుల్తాన్‌బజార్, హైద్రాబాద్-95 Ph.: 24558707, Email : aryavithal@yahoo.co.in.
संपादक: श्री विट्ठल राव आर्य प्रधान सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रेस चिक्कडपल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया।
प्रकाशक: आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाना सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद तेलंगाना-९५